# अर्थशास्त्र

## (समष्टि अर्थशास्त्र)

### अध्याय-6: खुली अर्थव्यवस्थाः समष्टि अर्थशास्त्र

Fukey Education

## भुगतान शेष

भुगतान शेष एक वर्ष की अवधि में किसी देश के सामान्य निवासियों और शेष विश्व के बीच समस्त आर्थिक लेन – देनों का एक विस्तृत एवं व्यवस्थित विवरण होता है। इसे विदेशी विनिमय के वार्षिक अन्त : प्रवाह तथा बाह्य प्रवाह का लेखा भी कहा जाता है।

## भुगतान शेष के घटक

- चालू खाता
- पूँजीगत खाता

## चालू खाता

- भुगतान शेष का चालू खाता अल्पकालीन वास्तविक लेन – देन का लेखा – जोखा होता है। इसमें दृश्य तथा अदृश्य दोनों प्रकार की मदों के आयात – निर्यात मूल्य को शामिल किया जाता है।
- चालू खाते के लेन – देन को वास्तविक खाता भी कहा जाता है। क्योंकि इनमें शामिल की जाने वाली समस्त मदों का वास्तविक रूप से लेन – देन किया जाता है। इन मदों का अर्थव्यवस्था के उत्पादन आय तथा रोजगार पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

## चालू खाते की मदें

- **तैयार वस्तुएँ :-** इनसे अभिप्राय निर्यात तथा आयात की उन मदों से है जो दृश्य है इसलिए इन्हें कहते हैं। निर्यात तथा आयात मदों को प्रकट करने वाले चालू खाते को अक्सर व्यापार संतुलन खाता कहते हैं।
- **अदृश्य मदे :-** वे मदे हैं, जो सेवाओं के रूप में शेष विश्व को दी जाती हैं। या शेष विश्व से प्राप्त होती है। सेवाओं को इसलिए अदृश्य कहा जाता है क्योंकि इन्हें छुआ तथा देखा नहीं जा सकता। जैसे : बैंकिग, बीमा, यातायात आदि को शामिल किया जाता है।
- **एक पक्षीय अन्तरण :-** विदेशों से प्राप्त दान व उपहार आदि लेनदारी पक्ष में रखे जाते हैं तथा अन्य देशों को दिए गए, इसी प्रकार के दान तथा उपहार देनदारी पक्ष (Debit Side)



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

में रखे जाते हैं इनमें निजी क्षेत्र तथा सरकारी क्षेत्र दोनों प्रकार के अन्तरण को शामिल किया जाता है।

- **निवेश आय :-** इससे अभिप्राय लगान, ब्याज, लाभ जैसों से है। हमारे देश द्वारा शेष विश्व से अर्जित आय " प्राप्ति " के रूप में तथा शेष विश्व द्वारा हमारे देश अर्जित आय को भुगतान के रूप में दिखाया जाता है।

## पूँजी खाता

भुगतान संतुलन का पूँजी खाता वित्तीय लेन – देन में संबंधित हैं। इसमें सभी प्रकार के अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन पूँजीगत अन्तरणों को शामिल किया जाता है। स्वर्ण के आदान – प्रदान को भी इसमें शामिल किया जाता है, इसका अर्थव्यवस्था के उत्पादन आय तथा रोजगार पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ता।

## पूँजीगत खाते की मदें

- **निजी विदेशी ऋण का लेन – देन :-** निजी क्षेत्र द्वारा विदेशी ऋणों की प्राप्ति की लेनदानी जमा या (Credit Side) तथा इन ऋणों की वापसी की देनदारी या नाम (Debit Side) पक्ष में लिखा जाता है।
- **बैंकिग पूँजी का प्रवाह :-** केन्द्रीय बैंक के अतिरिक्त बैंक पूँजी का आंतरिक प्रवाह जमा मद (Credit Side) में तथा बाध प्रवाह नाम मद (Debit Side) में शामिल होता है।
- **सरकारी पूँजी का लेन देन :-** सरकारी क्षेत्र द्वारा विदेशों से तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से प्राप्त ऋण की जमा खाते (Credit Side) में तथा वापिस किए हुए ऋणों के खाते (Debit Side) में शामिल किया जाता है।
- **सोने का लेन – देन :-** जब एक देश का केन्द्रीय बैंक विदेशों से सोना खरीदता है तो उसे भुगतान संतुलन के देनदारी पक्ष में लिखा जाता है, इसके विपरीत यदि सोना बेचता है, तो उसे भुगतान संतुलन में लेनदारी पक्ष में लिखा जाता है।
- **अन्य विधि :-** उपरोक्त मदों के अतिरिक्ति सभी प्रकार की सरकारी प्राक्तियों को जमा पक्ष में (Credit Side) तथा सभी सरकार के भुगतान के नाम पक्ष मे लिखा जाता है।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

## भुगतान शेष में असंतुलन

असंतुलन उस अवस्था को कहते हैं, जिसमें भुगतान शेष या तो बचत वाला हो या घाटे वाला हो। भुगतान शेष में असंतुलन तब पाया जाता है जब सभी प्राप्तियाँ भुगतान से अधिक होती हैं तो भुगतान बचत वाला होता है तथा जब सभी प्राप्तियाँ, भुगतान से होती हैं। भुगतान संतुलन घाटे वाला होता है।

## भुगतान शेष असंतुलन होने के निम्नलिखित कारण

- **विकास कार्यक्रम :-** विकासशील देशों में सरकार द्वारा विकास कार्यक्रमों के लिए बड़े पैमाने पर आयात किए जाते हैं। जिससे भुगतान शेष में असंतुलन पैदा होता है।
- **जनसंख्या में वृद्धि :-** विकसित देशों की तुलना में अल्पविकसित देशों की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। जिससे वस्तुओं तथा सेवाओं की माँग में तेजी से वृद्धि हो रही है। परिणामस्वरूप निर्यात घट रहा है तथा आयात बढ़ रहा है, जिससे भुगतान शेष में असंतुलन उत्पादन होता है।
- **मुद्रा स्फीति :-** घरेलू बाजार में मुद्रा स्फीति की दरें ऊँची होने से बड़ी मात्रा में आवश्यक वस्तुओं का आयात करना पड़ता है जिससे अर्थव्यवस्था के भुगतान शेष में असंतुलन उत्पन्न होता है।
- **व्यापार चक्र :-** मँदी अथवा तेजी के रूप में व्यापार चक्री का चलना। तेजी के समय देश में बड़ी मात्रा में निर्यात किए जाते हैं जिससे भुगतान शेष में असंतुलन उत्पन्न होता है।
- **प्राकृतिक कारण :-** प्राकृतिक आपदाएँ जैसे : सूखा, बाढ़, भूकम्प आदि देश के उत्पादन पर कुप्रभाव डालते हैं। जिससे देश के परिणास्वरूप भुगतान शेष की स्थिति उत्पन्न होता है।

## भुगतान शेष तथा व्यापार में अन्तर

- व्यापार शेष केवल दृश्य वस्तुओं के निर्यात आयात का अन्तर है जबकि भुगतान शेष एक देश तथा शेष विश्व के साथ किए गए आर्थिक लेन – देन का लेखा – जोखा है।
- व्यापार शेष भुगतान शेष चालू खाते का एक भाग है, जबकि भुगतान शेष चालू खाते तथा पूँजी खाते से संबंधित है।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- व्यापार शेष केवल दृश्य मदें ही शामिल होती हैं जबकि भुगतान शेष में दृश्य तथा अदृश्य दोनों प्रकार की मदें शामिल होती हैं।
- व्यापार शेष अनुकूल / प्रतिकूल या संतुलित हो सकता है, जबकि भुगतान शेष सदैव संतुलित रहता है।

## व्यापार शेष

किसी देश के सामान्य निवासियों ओर शेष विश्व के बीच दृश्य मदों (वस्तुओं) के आयात तथा निर्यात का अन्तर होता है।

## स्वायत्त सौदों

स्वायत्त सौदों से अभिप्राय उन आर्थिक लेन देनों से है जिन्हें लाभ के उद्देश्य से किया जाता है। इनका उद्देश्य भुगतान शेष खाते में सन्तुलन बनाए रखना नहीं होता। इन्हे रेखा के ऊपर की मदें कहा जाता है।

## समायोजन मदें

समायोजन मदें वे आर्थिक सौदें हैं जिन्हें किसी देश की सरकार द्वारा भुगतान शेष को सन्तुलित बनाए रखने के लिए किया जाता है, इनका उद्देश्य भुगतान शेष खाते के असन्तुलन को दूर करना होता है, इन्हें रेखा के नीचे की मदें भी कहा जाता है।

## भुगतान शेष में घाटा

जब स्वायत्त प्राप्तियों का मूल्य, स्वायत्त भुगतान के मूल्य से कम हो जाता है तो भुगतान शेष में घाटा कहते हैं।

## विनिमय दर

एक देश की करेन्सी का जिस दर पर दूसरे देश की करेन्सी से विनिमय किया जाता है उसे विदेशी विनिमय दर कहते हैं।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

## विनिमय दर के प्रकार

- स्थिर विदेशी विनिमय दर
- लोचशील या नम्य विनिमय दर

## स्थिर विदेशी विनिमय दर

वह विदेशी विनिमय दर जिसका निर्धारण या तो देश की सरकार या मौद्रिक अथॉरिटी (केन्द्रीय बैंक) करें उसे स्थिर विदेशी विनिमय दर कहते हैं।

## लोचशील या नम्य विनिमय दर

- लोचशील या नम्य विनिमय दर का निर्धारण विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति की शक्तियों पर निर्भर करता है। विदेशी मुद्रा की मांग तथा नम्य विनिमय दर में विपरीत सम्बन्ध होता है। यदि विनिमय दर ऊँची है तो विदेशी मुद्रा की मांग कम होगी।
- विलोमशः इसके विपरीत विदेशी विनिमय दर व विदेशी मुद्रा की पूर्ति में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। यदि विदेशी विनिमय दर अधिक है, तो विदेशी मुद्रा की पूर्ति अधिक होगी।

## नम्य विनिमय दर के गुण

- विदेशी मुद्राओं के भण्डार की आवश्यकता नहीं
- संसाधनों का सर्वोत्तम आबंटन
- भुगतान सन्तुलन खाते में स्वतः समायोजन
- व्यापार ओर पूँजी के आवागमन में आने वाली रूकावटों को दूर करना

## नम्य विनिमय दर के दोष

- विदेशी विनिमय दर में अस्थिरता
- सट्टेबाजी को बढ़ावा

## नम्य विनिमय दर का निर्धारण



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

- नम्य विनिमय दर प्रणाली के अन्तर्गत, विदेशी विनिमय दर का निर्धारण बाजार शक्तियों द्वारा होता हैं। दूसरे शब्दों में सन्तुलन विनिमय दर का निर्धारण विदेशी मुद्रा की मांग तथा उसकी पूर्ति द्वारा होता है।
- विदेशी विनिमय की मांग तथा विनिमय दर में विपरीत सम्बन्ध होता है। इसलिए विदेशी विनिमय की मांग वक्र ऋणात्मक ढाल की होती है। विदेशी विनिमय की पूर्ति तथा विनिमय दर में धनात्मक (प्रत्यक्ष) सम्बन्ध होता है।
- इसलिए विदेशी विनिमय की पूर्ति वक्र धनात्मक ढाल की होती है। दोनों वक्रों के अतः क्रिया द्वारा सन्तुलन विदेशी विनिमय दर का निर्धारण होता है।

## विदेशी मुद्रा मांग के स्रोत

- विदेशों में वस्तुओं व सेवाएँ खरीदने के लिए
- विदेशों में वित्तीय परिसम्पत्तियां (जैसे बांड, शेयर) खरीदने के लिए
- विदेशी मुद्राओं के मूल्यों पर सट्टेबाजी के लिए
- विदेशो में प्रत्यक्ष निवेश (जैसे – दुकान, मकान, फैक्टरी खरीदना) के लिए

## विदेशी मुद्रा की पूर्ति के स्रोत

- विदेशियों द्वारा घरेलू बाजार में प्रत्यक्ष (वस्तुओं व सेवाओं की) खरीद
- विदेशियों द्वारा प्रत्यक्ष निवेश
- विदेशी पर्यटकों का हमारे देश में भ्रमण
- विदेशों में रहने वाले अनिवासी भारतीय द्वारा भेजा गया धन या प्रेषणाएँ (एक पक्षीय हस्तातरण)
- वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात

## सन्तुलन विनिमय दर

वह विदेशी विनिमय दर जिस पर विदेशी विनिमय की मांग और पूर्ति दोनों बराबर होते हैं उसे सन्तुलन विदेशी विनिमय दर कहते हैं।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

## प्रबंधित तरणशीलता

एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय दर के निर्धारण को बाजार शक्तियों पर छोड़ देता है परन्तु समय – समय पर आवश्यकता के अनुसार दर को प्रभावित करने के लिए हस्तक्षेप भी करता है। जब विदेशी विनिमय की दर अत्यधिक निम्न हो केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय का क्रय करना शुरू कर देता है और जब विदेशी विनिमय की दर अधिक हो तो विदेशी विनिमय का विक्रय शुरू कर देता है।

## अवमूल्यन

जब देश की सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक घरेलू मुद्रा का बाह्य मूल्य घटाती है तो उसे अवमूल्यन कहते हैं। इससे आयात महंगी तथा निर्यात सस्ती हो जाती है। सामान्यतः यह स्थिर विनियम दर प्रणाली में होता है।

## अधिमूल्यन

जब सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक घरेलू मुद्रा के बाह्य मूल्य को बढ़ाती है तो मुद्रा का अधिमूल्यन कहलाता हैं। सामान्यतः यह स्थिर विनिमय दर में होता हैं।

## मुद्रा का मूल्यहास

जब अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मुद्रा की माँग तथा पूर्ति के फलस्वरूप घरेलू मुद्रा के मूल्य में विदेशी मुद्रा के मूल्य के सापेक्ष गिरावट आती है तो यह मुद्रा को मूल्यहास कहलाता है।

## मुद्रा की मूल्यवृद्धि

अंतर्राष्ट्रीय बाजार में, मुद्रा की मांग तथा पूर्ति के फलस्वरूप घरेलू मुद्रा के मूल्य में विदेशी मुद्रा के सापेक्ष बढ़ोतरी होती है तो यह मुद्रा की मूल्यवृद्धि कहलाती है।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

## NCERT SOLUTIONS

## प्रश्न (पृष्ठ संख्या 106)

प्रश्न 1 संतुलित व्यापार शेष और चालू खाता संतुलन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- संतुलित बाजार शेष का अर्थ है कि देश में वस्तुओं का निर्यात और वस्तुओं का आयात बराबर है। सूत्र के रूप में,

संतुलित व्यापार शेष वस्तुओं का निर्यात - वस्तुओं का आयात = 0

चालू खाता संतुलन का अर्थ है कि देश में वस्तुओं का निर्यात, सेवाओं का निर्यात तथा हस्तांतरण प्राप्तियों का योग वस्तुओं के आयात, सेवाओं के आयात तथा हस्तांतरण भुगतान के योग के बराबर हो, सूत्र के रूप में।

चालू खाता संतुलन = वस्तुओं का निर्यात + सेवाओं का निर्यात + हस्तांतरण प्राप्तियाँ - वस्तुओं का आयात - सेवाओं का आयात - हस्तांतरण भुगतान = 0

प्रश्न 2 आधिकारिक आरक्षित निधि का लेन-देन क्या है? अदायगी संतुलन में इनके महत्व का वर्णन कीजिए।'

उत्तर- आधिकारिक आरक्षित लेन-देन से अभिप्राय सरकारी कोषों में उपलब्ध सोने के कोष तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा के कोष में कमी और वृद्धि से है। इसका प्रयोग अदायगी संतुलन के आधिक्य और घाटे को ठीक करने के लिए किया जाता है। घाटे की दशा में विदेशी विनिमय बाजार में करेंसी को बेचकर तथा अपने देश के विदेशी विनिमय को कम करके कोई देश अधिकृत आरक्षित निधि संव्यवहार का कार्य कर सकता है। अधिकृत आरक्षित निधि में कमी को कुल अदायगी-घाटा संतुलन कहते हैं। इसके विपरीत आधिक्य की दशा में विदेशी विनिमय बाजार में करेंसी को खरीदकर तथा अपने देश के विदेशी विनिमय को बढ़ा करके कोई देश अधिकृत आरक्षित निधि संव्यवहार का कार्य कर सकता है। अधिकृत आरक्षित निधि में वृद्धि को कुल अदायगी आधिक्य संतुलन कहते हैं।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

प्रश्न 3 मौद्रिक विनिमय दर और वास्तविक विनिमय दर में भेद कीजिए यदि आपको घरेलू वस्तु अथवा विदेशी वस्तुओं के बीच किसी को खरीदने का निर्णय करना हो तो कौन-सी दर अधिक प्रासंगिक होगी?

उत्तर- मौद्रिक विनिमय दर वह विनिमय दर है, जिसमें एक करेंसी की अन्य करेंसियों के संबंध में औसत शक्ति को मापते समय कीमत स्तर में होने वाले परिवर्तनों पर ध्यान नहीं दिया जाता। अन्य शब्दों में, यह मुद्रास्फीति के प्रभाव से मुक्त नहीं होती। इसके विपरीत, वास्तविक विनिमय दर वह है जिसमें विश्व के विभिन्न देशों के कीमत स्तरों में होने वाले परिवर्तन को ध्यान में रखा जाता है। यह वह विनिमय दर से, जो स्थिर कीमतों पर आधारित होने के कारण मुद्रास्फीति के प्रभाव से मुक्त होती है। किसी भी एक समय पर, घरेलू वस्तुएँ खरीदने के लिए मौद्रिक विनिमय दर अधिक उपयुक्त होती है।

प्रश्न 4 यदि 1 ₹ की कीमत 1.25 येन है और जापान में कीमत स्तर 3 हो तथा भारत में 1.2 हो तो भारत और जापान के बीच वास्तविक विनिमय दर की गणना कीजिए (जापानी वस्तु की कीमत भारतीय वस्तु के संदर्भ में)। संकेत: रुपये में येन की कीमत के रूप में मौद्रिक विनिमय दर को पहले ज्ञात कीजिए।

संकेत- रूपये में येन की कीमत के रूप में मौद्रिक विनिमय दर को पहले ज्ञात कीजिए।

उत्तर-

$$₹\ 1 = 1.25 \text{ येन}$$

$$1 \text{ येन} = \frac{1}{1.25} ₹ = 0.80\ ₹$$

यह मौद्रिक विनिमय दर है।

$$\text{वास्तविक विनिमय दर} = 0.80 \times \frac{1.2}{3}$$

$$= \frac{0.96}{3} = 0.32$$

1 येन = 0.32 ₹



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

प्रश्न 5 स्वचालित युक्ति की व्याख्या कीजिए, जिसके द्वारा स्वर्णमान के अंतर्गत अदायगी-संतुलन प्राप्त किया जाता था।

उत्तर- डेविड ह्यूम (David Hume) नामक एक अर्थशास्त्री ने 1752 में इसकी व्याख्या की कि किस प्रकार स्वर्णमान के अंतर्गत स्वचालित युक्ति से अदायगी-संतुलन प्राप्त किया जाता था। उनके अनुसार यदि सोने के भण्डार में कमी हुई, तो सभी प्रकार की कीमतें और लागत भी अनुपातिक रूप से कम होंगी और इसके फलस्वरूप घरेलू वस्तुएँ विदेशी वस्तुओं की तुलना में सस्ती हो जायेंगी। तदनुसार, आयात घटेगा और निर्यात बढेगा। जिस देश से घरेलू अर्थव्यवस्था आयात कर रही थी और सोने में उसको भुगतान कर रही थी, उसको कीमतों और लागतों में वृद्धि का सामना करना पड़ेगा। अतः उनका महँगा निर्यात घटेगा और घरेलू अर्थव्यवस्था से आयात बढ़ेगा। इस प्रकार धातुओं के कीमत तंत्र द्वारा सोने की क्षति उठाकर अदायगी संतुलन में सुधार लाना होता है। सापेक्षिक कीमत । पर जब तक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में साम्य की पुनस्थापना नहीं होती, तब तक प्रतिकूल व्यापार संतुलन वाले देश के अदायगी संतुलन को अनुकूल व्यापार संतुलन वाले देश के अदायगी संतुलन को समकक्ष लाता है। इस संतुलन की प्राप्ति के बाद शुद्ध सोने का प्रवाह नहीं होता और आयात-निर्यात संतुलन बना रहता हैं इस प्रकार स्वचालित साम्यतंत्र के द्वारा स्थिर विनिमय दर को कायम रखा जाता था।

प्रश्न 6 नम्य विनिमय दर व्यवस्था में विनिमय दर का निर्धारण कैसे होता है?

उत्तर- नम्य विनिमय दर का निर्धारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार में पूर्ति तथा माँग की शक्तियों द्वारा होता है, जबकि विदेशी विनिमय की माँग इसकी अपनी कीमत से विपरीत रूप से संबंधित होती है, विदेशी विनिमय की पूर्ति इसकी अपनी कीमत से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित होती है।

प्रश्न 7 अवमूल्यन और मूल्यह्रास में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- अवमूल्यन सरकार द्वारा आयोजन के अनुसार विदेशी करेंसी के संबंध में घरेलू करेंसी के मूल्य में कमी है, यह उस स्थिति में होता है जब विनिमय दर का निर्धारण पूर्ति और साँग की शक्तियों द्वारा नहीं होता है परंतु विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा निश्चित किया जाता है। मूल्यहास विदेशी करेंसी के संबंध में, घरेलू करेंसी के मूल्य में आने वाली कमी है, यह उस स्थिति में होता है, जब अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार में विनिमय दर का निर्धारण पूर्ति और माँग की शक्तियों द्वारा होता है।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

प्रश्न 8 क्या केंद्रीय बैंक प्रबंधित तिरती व्यवस्था में हस्तक्षेप करेगा? व्याख्या कीजिए।

उत्तर- हाँ केंद्रीय बैंक प्रबंधित तिरती व्यवस्था में हस्तक्षेप करेगा यह अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार में विदेश करेंसी के विक्रय तथा क्रय के द्वारा होता है। जब केंद्रीय बैंक को लगता है कि घरेलू करेंसी के बाजार मूल्य का अत्याधिक मूल्यह्रास हो रहा है, तो इसे नियंत्रित करने के लिए तथा घरेलू करेंसी के पूर्व मूल्य को स्थापित करने के लिए यह अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार में यू.एस.डॉलर की बिक्री करेगा। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार में डॉलर बेचकर केंद्रीय बैंक डॉलर पूर्ति में वृद्धि करता है। अन्य बातें समान रहने पर डॉलर की पूर्ति में वृद्धि होने से घरेलू करेंसी के संबंध में डॉलर की कीमत में कमी की संभावना होती है। ऐसी क्रिया तब अनिवार्य हो जाती है, जब रुपये के मूल्य में कमी के कारण सरकार का आयात बिल बढ़ जाता है। इसी भांति जब केंद्रीय बैंक यह महसूस करता है कि घरेलू करेंसी का बाजार मूल्य अत्यधिक बढ़ रहा है तो वह विदेशी करेंसी खरीदना आरंभ कर देता है जब विदेशी करेंसी के लिए माँग में वृद्धि होती है, तो घरेलू करेंसी के संबंध में इसकी कीमत बढ़ने लगती है अब विदेशी एक यू.एस. डॉलर से अधिक घरेलू वस्तुएँ खरीद सकते हैं। तदनुसार, घरेलू वस्तुओं के लिए निर्यात माँग पुनः होने लगती है।

प्रश्न 9 क्या देशी वस्तुओं की माँग और वस्तुओं की देशीय माँग की संकल्पनाएँ एक समान हैं?

उत्तर- घरेलू वस्तुओं के लिए माँग तथा वस्तुओं के लिए घरेलू माँग दोनों अलग-अलग अवधारणाएँ हैं। घरेलू वस्तुओं के लिए माँग में घरेलू उपभोक्ताओं तथा विदेशियों द्वारा वस्तुओं के लिए की गई माँग शामिल होती है। वस्तुओं के लिए घरेलू माँग देश तथा विदेश में उत्पादित वस्तुओं के लिए की गई माँग है।

घरेलू वस्तुओं के लिए माँग = C + I + G + X - M

वस्तुओं के लिए घरेलू माँग = C + I + G

अतः घरेलू वस्तुओं के लिए माँग = वस्तुओं के लिए घरेलू माँग + (X - M)

प्रश्न 10 जब M = 60 + 0.06Y हो, तो आयात की सीमांत प्रवृत्ति क्या होगी? आयात की सीमांत प्रवृत्ति और समस्त माँग फलन में क्या संबंध है?



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

उत्तर- आयात की सीमांत प्रवृत्ति = 0.06 होगी आयात की सीमांत प्रवृत्ति और समस्त माँग फलन से अप्रत्यक्ष संबंध है। अर्थात आयात की सीमांत प्रवृत्ति बढ़ने पर समस्त माँग फलन कम हो जाता है और आयात की सीमांत प्रवृत्ति कम होने पर समस्त माँग फलन बढ़ जाता है।

प्रश्न 11 खुली अर्थव्यवस्था स्वायत्त व्यय खर्च गुणक बंद अर्थव्यवस्था के गुणक की तुलना में छोटा क्यों होता है?

उत्तर- खुली अर्थव्यवस्था गुणक बंद अर्थव्यवस्था गुणक से छोटा होता है, क्योंकि घरेलू माँग का एक हिस्सा विदेशी वस्तुओं के लिए होता है। अतः स्वायत्त माँग में वृद्धि से बंद अर्थव्यवस्था की तुलना में निर्गत में कम वृद्धि होती। है। इससे व्यापार शेष में भी गिरावट होती है।

प्रश्न 12 पाठ में इकमुश्त कर की कल्पना के स्थान पर आनुपातिक कर T = tY के साथ खुली अर्थव्यवस्था गुणक की। गणना कीजिए।

उत्तर- यदि कर = T है तो गुणक की गणना इस प्रकार होगी-

$$AD = a + b(y - T + T\bar{R}) + I + G$$

$$AD_1 = a + b(y - T - \Delta T + T\bar{R}) + I + G$$

आय का संतुलन $y = AD$

$$y_1 = \frac{1}{1-b}(a - bT + b\overline{TR} + I + G)$$

$$y_2 = \frac{-b\Delta T}{1-b}(a - bT + b\overline{TR} + I + G)$$

$$\Delta y = y_2 - y_1 = \frac{-b\Delta T}{1-b}$$

$$\frac{\Delta y}{\Delta T} = \text{कर गुणांक} = \frac{-b}{1-b}$$

यदि कर का फलन T की जगह +y हो जाए तो,

$C = a + b(y - ty + \overline{TR})$ हो जायेगा

$$= a + b(1 + t)y + T\bar{R}$$



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

अतः अनुपातिक करों से आय के स्तर पर न केवल उपभोग पहले से कम होगा, बल्कि उपभोग फलन की प्रवणता भी पहले से कम होगी।

अतः ऐसे में $AD = AS$

$$y = a + b(1-t)y + b\overline{TR} + I + G$$

$$y_1 = \frac{a+b\overline{TR}+I+G}{1-b(1-t)}$$

+y बदलने पर,

अतः गुणक $= \frac{1}{1-b(1-t)}$

अतः इकमुश्त कर की स्तिथि में कर गुणक $= \frac{-b}{1-b}$

और अनुपातिक वार की स्थिति में कर गुणक $= \frac{1}{1-b(1-t)}$

इससे सिद्ध होता है कि एकमुश्त कर की स्थिति में कर गुणक अधिक होता है और अनुपातिक कर की स्थिति में यह कम होता है। इकमुश्त कर की स्थिति में जब सरकारी व्यय में वृद्धि के फलस्वरूप, जब आय में वृद्धि होती है तो उपभोग में आय की वृद्धि की C गुणा वृद्धि होती है। अनुपातिक कर के साथ उपभोग में C – Ct गुणा आय में वृद्धि होती है।

प्रश्न 13 मान लीजिए C = 40 +0.8 yD, T = 50, I = 60, G = 40, X = 90, M = 50 + 0.05Y

1. संतुलन आय ज्ञात कीजिए।
2. संतुलन आय पर निवल निर्यात संतुलन ज्ञात कीजिए।
3. संतुलन आय और निवल निर्यात संतुलन क्या होता है, जब सरकार के क्रय में 40 से 50 की वृद्धि होती है?

उत्तर-

1. आय संतुलन में होती है, जब



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

$$AD = AS$$

$$AD = C + I + G(X - M),\ AS = y$$

$$AD = 40 + 0.8(y - 50) + 60 + 40 + 90 - 50 - 0.5y(y_D = y - T)$$

$$AS = y, y = 180 + 0.8y - 40 - 0.5y$$

$$y - 0.3y = 140, 0.3y = 140$$

$$y = \frac{140}{0.7},\ y = ₹\ 200 \text{ करोड़}$$

2.

निवल निर्यात $= X - M = 90 - 50 - 0.5y$

$y = 200$ डालने पर

$= 40 - 0.5(200) = ₹\ 60$ करोड़

3.

i. यदि G = 50 तो संतुलन आय,

$$y = 40 + 0.8(y - 50) + 60 + 50 + 90 - 50 - 0.5y(y_D = y - T)$$

$$y = 190 + 0.8y - 40 - 0.5y$$

$$y = 150 + 0.3y,\ 0.7y = 150$$

$$y = \frac{1500}{0.7} = \frac{1500}{7} = 214.28 \text{ करोड़}$$

ii. यदि G = 50 हो तो निवल निर्यात = X - M

$$90 - 50 - 0.5y$$

$y = \frac{1500}{7}$ डालने पर

$$y = \frac{0.5}{10}\left(\frac{1500}{7}\right)$$

$$40 - 107.14 = 67.14 \text{ करोड़}$$



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

प्रश्न 14 उपर्युक्त उदाहरण में यदि निर्यात में x = 100 का परिवर्तन हो तो संतुलन आय और निवल निर्यात संतुलन में परिवर्तन ज्ञात कीजिए।

उत्तर- माना संतुलन AD = AS

$$AD = C + I + G + (X - M)$$

$$AS = y$$

$$C + I + G + (X - M) = y$$

$$40 + 0.8(y - 50) + 60 + 40 + (100 - 50 - 0.5y) = y$$

$$40 + 0.8y - 40 + 60 + 40 + 50 - 0.5y = y$$

$$0.7y = 150,\ y = 214.28 \text{ करोड़}$$

निवल निर्यात = X - M

$$100 - 50 - 0.5(214.28)$$

$$= 50 - 107.14$$

$$= -57.14 \text{ करोड़}$$

प्रश्न 15 व्याख्या कीजिए कि- G - T = (Sg - 1) - (X - M)

उत्तर- एक अर्थव्यवस्था में आय संतुलन में होता है जब AD = AS हो।



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

$AD = C + I + G + (X - M)$

$AS = C + S + T$

अतः अर्थव्यवस्था संतुलन में होती है जब

$C + S + T = C + I + G + (X - M)$

पुनः प्रतिबंधित करने पर

$(S - I) - (X - M) = G - T$

अतः सिद्ध हुआ।

यह इसकी बीजगणितीय सिद्धि थी। तार्किक आधार पर अर्थव्यवस्था संतुलन में होती है, जब क्षरण = भरण हो। S, T और M क्षरण हैं जबकि I, G और X भरण हैं। जब इनका अंतर बराबर होगा तो आय को चक्रीय प्रवाह संतुलन होगा।

प्रश्न 16 यदि देश B से देश A में मुद्रास्फीति ऊँची हो और दोनों देशों में विनिमय दर स्थिर हो तो दोनों देशों के व्यापार शेष का क्या होगा?

उत्तर- देश B के लोग घरेलू वस्तुएँ अधिक लेंगे और आयात कम करेंगे विदेशी भी देश की वस्तुएँ अधिक खरीदेंगे। अतः देश B में निर्यात > आयात होगा इसीलिए देश B का व्यापार शेष धनात्मक होगा। इसके विपरीत देश A के लोग विदेशी वस्तुएँ अधिक लेंगे और आयात अधिक करेंगे। विदेशी भी देश A से वस्तुएँ खरीदना नहीं चाहेंगे अतः देश A में आयात > निर्यात होगा इसीलिए देश A का व्यापार शेष ऋणात्मक होगा।

प्रश्न 17 क्या चालू पूँजीगत घाटा खतरे का संकेत होगा? व्याख्या कीजिए।

उत्तर- चालू पूँजीगत खाता खतरे का संकेत होगा यदि इसका प्रयोग उपभोग अथवा गैर विकासात्मक कार्यों के लिए किया जा रहा है। यदि इसका उपयोग विकासात्मक योजनाओं के लिए किया जा रहा है, तो इससे अर्थव्यवस्था में आय और रोजगार का स्तर ऊँचा उठेगा। आय और रोजगार का स्तर ऊँचा उठने का अर्थ है कि भारतीयों की क्रय शक्ति बढ़ेगी। भारतीय अर्थव्यवस्था



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

की निर्यात क्षमता बढ़ेगी, विदेशों में निवेश करने की क्षमता बढ़ेगी तथा सरकारी आय (कर तथा अन्य कारकों से) बढ़ेगी जिससे अर्थव्यवस्था इस घाटे की पूर्ति करने में समर्थ हो जायेगी।

प्रश्न 18 मान लीजिए C = 100 + 0.75YD, I = 500, G = 750 कर आय का 20 प्रतिशत है, x = 150, M = 100 + 0.2Y है तो संतुलन आय, बजट घाटा अथवा आधिक्य और व्यापार घाटा अथवा अधिक्य की गणना कीजिए।

उत्तर- अर्थव्यवस्था में संतुलन आय स्तर वह होता है जहाँ,'

AD = AS, AD = C + I + G + (X - M)

AD = 100 + 0.75(Y - 0.2Y) + 500 + 750 + (150 - 100 - 0.2Y)

(Yd = Y - 0.2Y क्योकि कर आय का 20% है।)

AD = 1350 + 0.75 - 0.15Y + 50 - 0.2Y

AD = 1400 + 0.40Y, AS = Y

AS = AD, Y = 1400 + 0.40Y

Y - 0.40y = 1400, 0.60Y = 1400

$$Y = \frac{1400}{0.6}, Y = \frac{1400}{6}$$

Y = 2333.33 करोड़

बजट घाटा = G - T

750 - 0.2(2333.33) = 750 - 466.66 = 283.34 करोड़

व्यापार घाटा = X - M = 150 - 100 – 0.2Y

50 - 0.292333.33 = 50 - 466.66 = 411.66 करोड़

प्रश्न 19 उन विनिमय दर व्यवस्थाओं की चर्चा कीजिए, जिन्हें कुछ देशों ने अपने बाह्य खाते में स्थायित्व लाने के लिए। किया है।

उत्तर- निम्नलिखित विनिमय दर व्यवस्थाओं का कुछ देशों ने अपने बाह्य खाते में स्थायित्व लाने के लिए प्रयोग किया है-



Website - www.fukeyeducation.com, Email :- fukeyeducation@gmail.com

1. विस्तृत सीमा पट्टी प्रणाली-इस प्रणाली के अंतर्गत अंतराष्ट्रीय मुद्रा बाजार में दी करेंसियों की समता दर के बीच +10% तक का सामंजस्य करके भुगतान शेष को ठीक करने की छूट होती है। यह ऐसी प्रणाली को कहते हैं, जो स्थिर विनिमय दर में विस्तृत परिवर्तन/ समंजन की अनुमति देती है।
2. चलित सीमाबंध प्रणाली-यह भी स्थिर और लोचशील विनिमय दर के बीच एक समझौता है, परंतु जैसा कि नाम है चलित यह कम विस्तृत है। इसके केवल समता दर के बीच +1% तक का सामंजस्य करके भुगतान शेष को ठीक करने की छूट होती है। यह लघु सामंजस्य है जिसे समय-समय पर दोहराया जा सकता है।
3. प्रबंधित तरणशीलता प्रणाली-स्थिर और लोचशील विनिमय दरों की एक अंतिम मिश्रित प्रणाली है। यह स्थिर विनिमय दर और नम्य विनिमय दर का मिश्रण है, जो सरकार द्वारा प्रबंधित तथा नियंत्रित होता है। इसमें विनिमय दर को लगभग पूरी तरह से स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है और मौद्रिक अधिकारी कभी-कभी हस्तक्षेप करते हैं।

Future's Key
Fukey Education